वाक्य और अर्थ विज्ञान

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

वाक्य और अर्थ विज्ञान

- वाक्य और उसके भेद
- पद बंध
- वाक्य संरचना और विश्लेषण
- अर्थ की अवधारणा
- शब्द और अर्थ का संबंध
- अर्थ परिवर्तन की दिशाएं और कारण

- भाषा विज्ञान में वाक्य की परिभाषा, वाक्यों की संरचना, वाक्य के मूलाधार, वाक्यों के प्रकार, वाक्यों के निकटस्थ अवयव और वाक्यों के रचनांतरण आदि पर विचार किया जाता है
- भाषा का मुख्य कार्य अभिव्यक्ति है भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्य के माध्यमों से होती है
- ध्वनि प्रतीकों या लिपि चिन्हों के आधार पर वाक्य का व्यक्त रूप सामने आता है

- भोलानाथ तिवारी ने वाक्य के संबंध में कहा है:-

"वाक्य भाषा की सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द हो जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण I व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही परोक्ष रूप से कम से कम एक क्रिया का भाव अवश्य होता है I"

वाक्य के भेद

- **आकृति मूलक भेद**

i. अयोगात्मक वाक्य

ii. श्लिष्ट योगात्मक वाक्य

iii. प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

- **रचनात्मक मूलक भेद**

i. सरल वाक्य

ii. मिश्र वाक्य

iii. संयुक्त वाक्य

- अर्थ मूलक भेद

i. विधि वाक्य
ii. निषेध वाक्य
iii. प्रश्न वाक्य
iv.अनुज्ञा वाक्य
v. संदेह वाक्य
vi. इच्छार्थक वाक्य
vii. संकेतार्थ वाक्य
viii. विस्मयार्थक वाक्य

- क्रिया मूलक भेद

i. क्रिया युक्त वाक्य
ii. क्रियाहीन वाक्य

- शैली मूलक

i. शिथिल वाक्य
ii. समीकृत वाक्य
iii. आवर्तक वाक्य

वाक्य में परिवर्तन की दिशाएँ-

- विकास के अनुसार विश्व की प्रत्येक भाषा में परिवर्तन होते हैं।
- भाषा में परिवर्तन के कारण वाक्यों के गठन और प्रयोग में भी परिवर्तन होते हैं।

1. पद क्रम में परिवर्तन
2. अधिक पद प्रयोग
3. अन्वय में परिवर्तन
4. पद या प्रत्यय का लोप
5. कोष्ठक और डैश का प्रयोग
6. आदरार्थ बहुवचन
7. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कथन
8. कारक के लिए अर्धविराम का प्रयोग

वाक्य परिवर्तन के कारण

- भाषा की विभिन्न इकाइयों में परिवर्तन का क्रम चलता रहता है।

- वाक्य की संरचना में भी परिवर्तन चलता रहता है। इन परिवर्तनों के मुख्य कारण निम्न है

1. मुख सुख
2. अन्य भाषाओं का प्रभाव
3. स्पष्टता
4. बलाघात
5. विभक्तियों का घिसना
6. मानसिक स्थिति
7. नवीनता
8. भावुकता
9. अज्ञानता
10. परंपरा का प्रभाव

पदबंध

- **पद**
  - वाक्य से अलग होने पर शब्द और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द पद कहलाते हैं
  - अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है ।
- **पदबंध**
  - जब दो या दो से अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते है तो उसे पदबंध कहते हैं ।

पदबंध के भेद

- संज्ञा पदबंध
  - जो पदबंध वाक्य में संज्ञा का कार्य करते हैं ।
  - उदा.- मेहनती व्यक्ति जीवन में सफल होते हैं।
- सर्वनाम पदबंध
  - जो पदबंध वाक्य में सर्वनाम पदों का कार्य करते हैं ।
  - उदा.- दिल्ली के डॉक्टरों में कुछ डॉक्टर अच्छे हैं।

- क्रिया पदबंध
  - वाक्य में कई पद मिलकर क्रिया का कार्य करते हैं तो क्रिया पदबंध कहलाते हैं।
  - उदा.- सीता गीत गा रही है।
- विशेषण पदबंध
  - जो पदबंध वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं वे विशेषण पदबंध कहलाते हैं।
  - उदा.- राम बहुत सुंदर चित्र बनाता है I

क्रिया विशेषण पदबंध

- किसी भी वाक्य में क्रिया विशेषण का कार्य करने वाले पदबंध क्रिया विशेषण पदबंध कहलाते हैं।
- उदा.- खिलाड़ी मैदान की ओर गए हैं।

➢शब्द शक्ति

- शब्दार्थ संबंध: शक्ति अर्थात् (बोधक) शब्द एवं अर्थ के संबंध को शब्द शक्ति कहते हैं।
- शब्द शक्ति का अर्थ है- शब्द की अभिव्यंजक शक्ति ।
- शब्द का कार्य किसी अर्थ की अभिव्यक्ति तथा उसका बोध कराना होता है।
- इस प्रकार शब्द एवं अर्थ का अभिन्न संबंध ही शब्द शक्ति है ।
- परिभाषा- शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापारों को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के भेद

- अभिधा शब्द शक्ति (वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ)
- लक्षणा शब्द शक्ति (लक्ष्यार्थ)
- व्यंजना शब्द शक्ति (व्यंग्यार्थ)

- **अभिधा शब्द शक्ति-**
  - शब्द को सुनने या पढ़ने के पश्चात् पाठक सीधा- सीधा अर्थ समझ में आ जाए वहाँ अभिधा शब्द शक्ति होती है।
- **लक्षणा शब्द शक्ति –**
  - मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर जिस अर्थ की प्रतीति होती है वहाँ लक्षणा शब्द शक्ति होती है।
- **व्यंजना शब्द शक्ति-**
  - मुख्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर जहां तीसरे अर्थ का बोध होता है वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है।

➢महत्व-

- किसी शब्द का महत्व उसमें निहित अर्थ पर निर्भर होता है ।
- बिना अर्थ के शब्द अस्तित्वविहीन एवं निरर्थक होता है।
- शब्द शक्ति के शब्द में निहित उसके अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है।
- काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ ग्रहण से ही काव्य आनंदायक बनता है ।
- अत: शब्द के अर्थ को समझना ही काव्य के आनंद को प्राप्त करने की प्रधान सीढ़ी है।

➢अर्थ की अवधारणा –

- सार्थकता भाषा का लक्षण है ।
- अर्थ द्योतित न कर पाने वाली भाषा भार-स्वरूप है।
- इस संबंध मे यास्क कहते है –

"यद् गृहीतम विज्ञात निगदेनैव शब्दते ।
अनग्नाविव शुष्कैंधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्।"

- जिस प्रकार बिना अग्नि के शुष्क ईधन प्रज्वलित नहीं हो सकता, उसी प्रकार बिना अर्थ समझे जो शब्द दोहराया जाता है,
- वह कभी अभिसिप्त विषय को प्रकाशित नहीं कर सकता ।

- अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए शब्द माध्यम है ।
- शब्द के द्वारा जो प्रतीति होती है उसे अर्थ कहते है ।
  - अर्थ की प्रतीति दो प्रकार की होती है –

- आत्म प्रत्यय(आत्मानुभाव)
- पर-प्रत्यय (पर-अनुभव)

- आत्म प्रत्यय- स्वंय किसी वस्तु को अपनी आँखों से देखने एवं अनुभव करने को आत्म प्रत्यय कहते है ।
- पर-प्रत्यय- दूसरों के दवारा प्रत्यक्ष हुआ ज्ञान स्वीकार कर लेते है उसे पर-प्रत्यय कहते है ।

शब्द और अर्थ का संबंध

- भाषा मे शब्द सार्थक होते है । वह शब्द किसी अर्थ (वस्तु) विशेष का बोध कराता है या अर्थ को संकेतित करता है । यह संकेत समाज द्वारा स्वीकृत होता है ।
- एक ही शब्द (ध्वनि समूह) का अर्थ भाषा भेद से बदल जाता है । अँग्रेज़ी में 'गो' शब्द का अर्थ होता है- जाना । लेकिन संस्कृत मे उसी शब्द का अर्थ होता है –गाय ।
- ध्वनि समूह से वस्तु के बोध या शब्द के अर्थ के बोध की प्रक्रिया को शक्ति ग्रह संकेत ग्रह कहा जाता है । यह संकेत ग्रह लोक व्यवहार एवं अनुभव से होता है ।

➢ अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ-

- भाषा परिवर्तन शील है इसलिए भाषा के शब्दों के अर्थों में परिवर्तन होता रहता है ।
- अर्थ परिवर्तन को अर्थ विकास भी कहा जाता है । इससे भाषा की जीवन्तता सुरक्षित रहती है ।
- अर्थ का यही निरंतर विकास भाषा का प्राण-तत्व है ।

❖ अर्थगत विकास तीन दिशाओं में देखा जाता है –

1. अर्थ संकोच
2. अर्थ विस्तार
3. अर्थादेश

❖ अर्थ परिवर्तन के कारण

1. लाक्षणिक प्रयोग
2. परिवेश का परिवर्तन
3. शिष्टाचार और विनम्रता
4. श्रवण सुखदता
5. व्यंग्य
6. भावात्मक बल
7. अज्ञान और भ्रांति
8. शब्दार्थ की अनिश्चिता
9. सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग
10. व्यक्ति के अनुसार शब्दों के प्रयोग में भेद

11. शब्दार्थ के एक तत्व की प्रधानता
12. साहचर्य के कारण गौण अर्थ की प्रमुखता
13. एक शब्द के भिन्न रूपों का विभिन्न अर्थों में प्रयोग
14. समस ,उपसर्ग ,लिंग-भेद
15. अन्य भाषाओं के शब्द
16. अन्य भाषाओं का प्रभाव

निष्कर्ष-

- भाषा निरंतर परिवर्तन होने के कारण उसके शब्दों का अर्थ भी बदलता रहता है ।
- जिस संदर्भ में भाषा का प्रयोग होता है उसी संदर्भ में शब्द का अर्थ भी बदलता है ।

धन्यवाद